पाठ 12

सल्तनतकालीन प्रशासन एवं जनजीवन

आइए सीखें

- सल्तनत काल की प्रशासनिक व्यवस्था कैसी थी?
- इस काल में सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक व्यवस्था में किस प्रकार के परिवर्तन आए।
- भक्ति-आंदोलन की विशेषताएँ क्या थी?

320 वर्षों के सल्तनत काल में मुस्लिम शासकों ने अपनी परंपरा और आवश्यकतानुसार प्रशासन व्यवस्था में अनेक परिवर्तन किए। इसी प्रकार भारतीय समाज और संस्कृति (भाषा साहित्य, वास्तुकला व धर्म आदि) में भी मुस्लिमों के सतत् संपर्क से अनेक परिवर्तन सामने आए।

1. प्रशासनिक व्यवस्था

सुल्तान की शक्ति सर्वोच्च होती थी। उसे ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था। सत्तारूढ़ होने पर सुल्तान के नाम का 'खुतबा' पढ़ा जाता था तथा उसके नाम के सिक्के जारी किए जाते थे।

प्रशासनिक कार्यों में वजीर, उलेमा (धर्मशिक्षक) और अमीरों का सहयोग महत्वपूर्ण था।

केन्द्रीय शासन के चार महत्वपूर्ण विभाग थे-

(अ) राजस्व तथा लोक प्रशासन (ब) सैन्य विभाग (स) राजकीय पत्र व्यवहार (द) शिक्षा और अनुदान। इन विभागों के अधिकारियों को क्रमशः दीवान-ए-विजारत, दीवान-ए-अर्ज, दीवान-ए-इंशा और दीवान-ए-रिसालत कहा जाता था।

राज्य सूबों में और सूबे शिको में, शिक परगनों (जिलों) में बंटे हुए थे। सूबे का प्रमुख वली या मुफ्ती, शिक का प्रमुख शिकदार और परगने का मुखिया आमिल कहलाता था।

- **तेरहवीं शताब्दी में सुल्तानों ने राज्य को सैनिक क्षेत्रों में विभाजित किया था। इन्हें इक्ता कहा जाता था। इसका मुख्य अधिकारी इक्तादार कहलाता था। इक्ता प्रणाली का प्रारंभ इल्तुतमिश द्वारा किया गया था।**

2. सामाजिक जीवन-

(1) समाज में मुख्यतः हिन्दू और मुस्लिम जनसंख्या निवास करती थी। समाज में उच्च वर्ग के लोग (अमीर व सरदार) सुल्तानों का अनुकरण करते हुए विलासिता का जीवन व्यतीत करते थे।

शिक्षण संकेत

- सल्तनत काल के प्रशासनिक अधिकारियों के नामों की सूची तैयार करवाएँ।
- सल्तनत काल में देश से निर्यात एवं आयात की जाने वाली वस्तुओं की सूची छात्रों से बनवाएँ।

(2) ब्राह्मण और उलेमाओं (धर्मशिक्षक) का समाज में महत्वपूर्ण स्थान था।

(3) जाति-व्यवस्था का पालन कठोरता से किया जाता था। स्त्रियों की स्वतंत्रता बहुत सीमित हो गई थी और पर्दा प्रथा का चलन बढ़ता जा रहा था।

(4) समाज में बाल विवाह, बहु-विवाह, सती प्रथा का प्रचलन था।

(5) मुस्लिम सुल्तानों में दास (गुलाम) प्रथा का प्रचलन था, उनके पास बड़ी संख्या में दास होते थे। कहा जाता है कि फिरोजशाह तुगलक के पास 1,80,000 गुलाम थे।

- **मोरक्को के यात्री इब्नबतूता ने अपने वर्णन में हिन्दुओं द्वारा किए जाने वाले 'आतिथ्य-सत्कार' की प्रशंसा की है।**

3. आर्थिक व्यवस्था

(1) सल्तनत काल में ग्रामीणों के आर्थिक जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आया, इनका मुख्य व्यवसाय (पूर्व की तरह) कृषि था।

(2) नगरों में व्यापार बहुत उन्नति कर रहा था। भड़ौच, खंभात, मुल्तान, लखनौती, सुनारगाँव आदि प्रमुख नगर व बंदरगाह थे।

(3) शिल्पकार अपने शिल्प के अनुसार नगर के अलग-अलग भागों में रहते थे। जैसे सारे सुनार एक बस्ती में, लुहार एक बस्ती में व जुलाहे एक बस्ती में रहते थे।

(4) वस्तुओं को हाट-बाजारों के माध्यम से खरीदा व बेचा जाता था। दिल्ली व्यापार का प्रमुख केन्द्र था। जहाँ देश के विभिन्न भागों से सामान आता था।

(5) भारत में जल-थल दोनों मार्गों से विदेशी व्यापार पनप रहा था।

निर्यात की मुख्य वस्तुएँ- सूती व रेशमी कपड़ा, जड़ी-बूटी, धातु के बर्तन, हाथी दाँत की वस्तुएँ आदि। काँच के बर्तन, व घोड़ों का आयात किया जाता था।

(6) राज्य की आय का मुख्य साधन भूमि कर था, जो उपज का 1/2 या 1/3 भाग था। इसके अतिरिक्त चुंगीकर, सिंचाई कर, खनिज संपत्ति, मकान कर, तीर्थ यात्रा कर आदि राज्य की आय के अन्य साधन थे।

- **हिन्दुओं और अन्य गैर मुस्लिमों से जजिया कर और मुसलमानों से जकात नामक कर लिया जाता था।**
- **इब्नबतूता ने दिल्ली का वर्णन करते हुए लिखा है कि, दिल्ली सबसे अधिक सुन्दर नगर था। देश के सभी भागों से दिल्ली नगर में सामान आता था।**
- **सुल्तानों द्वारा चांदी के टंके व तांबे की दरहम नामक मुद्रा चलाई गई।**

भाषा साहित्य एवं विज्ञान-

(1) प्राथमिक शिक्षा केन्द्र पूर्ववत् मंदिर व मस्जिद होते थे। कुछ स्थानों पर प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की गयी थी।

(2) उच्च शिक्षा के लिए टोल (महाविद्यालय) व मदरसों की व्यवस्था होती थी।

(3) केन्द्रीय स्तर पर फारसी भाषा का प्रयोग होता था, जिसके प्रभाव से भारतीय भाषाओं में भी फारसी के बहुत से शब्दों का प्रयोग होने लगा था।

(4) हिन्दी और फारसी के सम्मिश्रण से इस काल में एक नई भाषा 'उर्दू' का जन्म हुआ, जो पारस्परिक बोलचाल की भाषा बन गई थी।

(5) उर्दू भाषा का व्याकरण हिंदी की तरह ही है, किन्तु इसके शब्दकोश में फारसी व हिन्दी भाषाओं के शब्द लिए गए है।

(6) इस काल में क्षेत्रीय भाषाओं का विकास हुआ, जिनमें उत्तम साहित्य की रचना हुई।

(7) कुछ हिन्दू राज्यों (जैसे विजयनगर) के राज दरबार में संस्कृत भाषा का प्रयोग किया जाता था। संस्कृत ग्रंथों के अनुवाद, भारतीय भाषाओं के साथ-साथ अरबी व फारसी भाषा में भी होने लगे थे।

(8) कागज का प्रचलन बढ़ने से अनेक प्राचीन ग्रंथों का पुनः लेखन हुआ।

इस काल के प्रसिद्ध दार्शनिक व साहित्यकार अमीर खुसरो ने अपनी रचनाओं में उर्दू, फारसी व हिन्दी भाषा का प्रयोग किया। वे पहले ऐसे मुस्लिम लेखक थे, जिन्होंने सर्वाधिक रचनाओं में हिन्दी भाषा का प्रयोग किया। इस काल के प्रसिद्ध कवि व लेखकों ने निम्नलिखित ग्रंथों की रचना की—

(1)	श्रीनाथ	-	हरविलास
(2)	मलिक मोहम्मद जायसी	-	पद्मावत्
(3)	अमीर खुसरो	-	पहेलियाँ-मुकरियाँ
(4)	नरपतिनाल्ह	-	बीसलदेव रासो तथा खुमान रासो
(5)	विद्यापति	-	मैथिली भाषा में लिखे पद

कबीर दास जी के दोहे व भक्ति गीत प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है।

- **अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो व अमीर दहलवी रहते थे। खुसरो अपनी पहेलियों, दोहों व कव्वालियों के लिए प्रसिद्ध हैं।**

चिकित्सा- इस काल में मौलाना बदरूद्दीन, मौलाना सदरूद्दीन तथा अजीमुद्दीन प्रसिद्ध चिकित्सक थे। शल्य चिकित्सा के लिए प्रसिद्ध वैद्य मच्छेन्द्र व जोग का नाम उल्लेखनीय है।

बर्नी ने अपनी पुस्तक तारीख-ए-फीरोजशाही में चिकित्सकों व खगोल शास्त्रियों की एक लंबी सूची प्रस्तुत की है।

वास्तुकला- तुर्क और अफगानों के आगमन के साथ- (फारस और मध्य एशिया) वास्तुकला की नई शैली भी भारत आई।

प्राचीन भारतीय वास्तुकला शैली में इस नई शैली के सम्मिश्रण से वास्तुकला के एक नवीन रूप का विकास हुआ।

(1) नुकीले मेहराब और गुम्बद तथा ऊंची सँकरी मीनारें इस काल की वास्तुकला की महत्वपूर्ण विशेषता थी।

(2) इस समय के अनेक शासकों ने उल्लेखनीय निर्माण कार्य करवाए, जिनमें प्रमुख हैं (अ) दिल्ली की कुतुबमीनार, (ब) फिरोजशाह का दुर्ग- फिरोजशाह कोटला, (स) अलाई दरवाजा, (द) लाल महल, (इ) तुगलकाबाद का किला, (ई) लोदी सुल्तानों के रंग-बिरंगे खपरैलों की डिजाइनों से सजे मकबरे।

जौनपुर के शासकों द्वारा बनवाई गई, अनेक मस्जिदें और मालवा के शासकों द्वारा मांडू की पहाड़ियों पर सुंदर राजमहल बनवाये गए। इस काल में दक्षिण में बीजापुर का गोलगुंबद बनाया गया जो संसार के बड़े गुंबदों में प्रमुख माना जाता है।

(3) दक्षिण के शासकों ने किलों के अंदर शानदार इमारतें बनवायी। दौलताबाद और गोलकुंडा के किले इसके प्रमुख उदाहरण है।

(4) सुदूर दक्षिण में विजयनगर के शासकों द्वारा मंदिरों का निर्माण व जीर्णोंद्वार करवाया गया। इनके द्वारा बनवाई गई इमारतों की सजावट व नक्काशी बहुत सुंदर है।

चित्रकला- लघु-चित्रों को बनाने की परंपरा इस समय जारी थी। शासकों द्वारा कलाकारों को राजाश्रय दिया जाता था। ये कलाकार शासकों व दरबारियों की पुस्तकों को चित्रों के माध्यम से सजाने का कार्य करते थे।

संगीत- फारस और अरब की संगीत शैली का प्रभाव, भारतीय संगीत पर पड़ा। दोनों के समन्वय से सितार, सारंगी, तबला, जैसे वाद्य-यंत्र लोकप्रिय हुए तथा गाायन की नई विधा कव्वाली का उदय हुआ।

धार्मिक-आंदोलन- इस काल में हिन्दू व मुस्लिम दोनों में ही जाति-प्रथा की कठोरता, आडम्बर जैसी अनेक कुरूतियाँ पनप रही थी। अतः इन सामाजिक बुराईयों को दूर कर समाज को सुसंगठित करने के उद्देश्य से कुछ समाज सुधारकों व संतों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जनता में परस्पर प्रेम व सद्भाव को बढ़ाने का प्रयास किया। इस आंदोलन का आरम्भ रामानंद ने किया था। संतों ने जिन भावनाओं को व्यक्त किया, वे कबीर और नानक की रचनाओं के रूप में व्यापक रूप से व्यक्त हुई।

इन सभी में धार्मिक कर्मकाण्डों की अपेक्षा भक्ति-भाव से प्रेमपूर्वक ईश्वर की उपासना करने पर बल दिया। यह विचारधारा दक्षिण से उत्तर तक, पूर्व से पश्चिम तक फैल गई और भक्ति-आन्दोलन के नाम से प्रसिद्ध हुई।

भक्ति-आन्दोलन- भक्ति आन्दोलन ने भारतीय समाज में एक नई चेतना का निर्माण किया। ये आन्दोलन जन-सामान्य में बहुत लोकप्रिय हुए, क्योंकि इस आन्दोलन के सभी संतों द्वारा अपने उपदेश, पदों व गीतों में स्थानीय भाषा का प्रयोग किया गया था।

भक्ति आन्दोलन के सूत्रधार आलवार व नयनार सन्तों ने कहानियों और गीतों के माध्यम से भक्ति भावना की परम्परा को प्रारम्भ किया था। दक्षिण के वल्लभाचार्य ने मथुरा, वृन्दावन, वाराणसी में कृष्ण के प्रति समर्पित भक्ति का प्रचार-प्रसार किया। बंगाल के चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण-लीला के बहुत से पदों की रचना की तथा देश के अन्य भागों में भक्ति के उपदेश देते हुए लोगों को अपने भक्तिपद सिखाये।

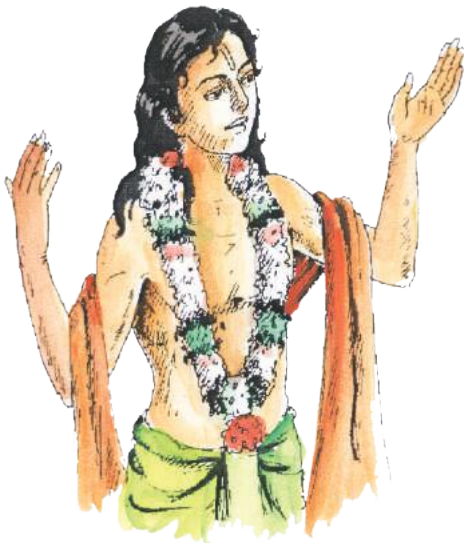

चित्र क्र.-30: चैतन्य महाप्रभु

चित्र क्र.-31: कबीर

महाराष्ट्र में ज्ञानेश्वर ने भक्ति के उपदेश दिये तथा गीता को मराठी भाषा में लिखा। जिससे संस्कृत न समझने वाले भी उसे समझ सकें। यहाँ नामदेव तथा तुकाराम दोनों ने प्रेम के माध्यम से ईश्वर की भक्ति करने का उपदेश दिया। कबीरदास बनारस में रहते थे। उन्होंने दोहों की रचना करके 'हिन्दु-मुस्लिम' एकता का प्रयास किया तथा सभी धर्मों को समान बताते हुए कर्मकाण्ड, आडम्बर व धार्मिक कट्टरता का विरोध किया।

गुरुनानक देव- इनका जन्म पंजाब के एक गाँव तलवण्डी (वर्तमान में पाकिस्तान में) में हुआ था। इन्होंने पूरे देश की यात्रा की और ईश्वर के निकट पहुँचने का मार्ग केवल प्रेमपूर्ण भक्ति ही बताया। जातिगत भेदभाव का विरोध किया व सभी मनुष्यों व धर्मों को समान बताया। इनके द्वारा दिये गये उपदेशों को एक पुस्तक में संग्रहित किया गया जिसे 'आदिग्रन्थ' कहते हैं। नानक देव सिक्ख-सम्प्रदाय के संस्थापक थे।

चित्र क्र.-32: गुरुनानक देव

सूफी सम्प्रदाय- मुस्लिम विचारकों, चिन्तकों व सन्तों का समुदाय 'सूफी-सम्प्रदाय' था। भक्ति-आन्दोलन के सन्तों के समान

ही सूफी सम्प्रदाय के सन्तों ने ईश्वर के निकट पहुंचने का मार्ग सच्ची भक्ति व प्रेम बताया। समाज की सेवा करना, अन्य धर्मों के प्रति उदार दृष्टिकोण रखना तथा आडम्बर व कट्टरवाद का विरोध करना ही सूफी सन्तों के उपदेशों में समाहित था। सूफी सन्तों द्वारा हिन्दी व स्थानीय भाषाओं में भी भक्ति गीत गाये जाते थे।

भक्ति-आन्दोलन का जन-जीवन पर प्रभाव- भक्ति आन्दोलन ने धर्म व समाज दोनों क्षेत्रों में व्याप्त आडम्बर व कुरीतियों को दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस आन्दोलन ने समाज में हिन्दू-मुसलमानों के भेद व अलगाव को दूर कर दोनों को निकट लाने का प्रयास किया।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) सल्तनत काल की प्रशासनिक व्यवस्था में प्रमुख विभाग कितने थे-

(अ) दो (ब) पाँच

(स) चार (द) सात

(2) व्यापार का प्रमुख केन्द्र कौन सा था, जहाँ देश के विभिन्न भागों से सामान आता था-

(अ) दिल्ली (ब) बंगाल

(स) गुजरात (द) मुल्तान

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(कोष्ठक में दिये गये शब्दों में से सही शब्द चुनकर भरें)

(1) हिन्दी और फारसी के सम्मिश्रण से इस काल में एक नई भाषा --------- का जन्म हुआ।

(तमिल, उर्दू, कन्नड़)

(2) इस काल के प्रसिद्ध दार्शनिक व साहित्यकार ---------- ने अपनी रचनाओं में उर्दू, फारसी व हिन्दी भाषा का प्रयोग किया।

(अमीर खुसरो, कबीरदास, नानक, मुइनुद्दीन चिश्ती)

(3) शल्य चिकित्सा के लिये वैद्य ---------- व ---------- का नाम प्रसिद्ध था।

(सद्रुद्दीन व अजीमुद्दीन, मच्छेन्द्र व जोग, वद्रुद्दीन व बर्नी)

3. निम्नलिखित की सही जोड़ियाँ बनाइए–

(1) कुतुबमीनार - बीजापुर

(2) गोल गुंबद - दिल्ली

(3) कबीर ने - सिख सम्प्रदाय की स्थापना की थी

(4) गुरुनानक - हिन्दु, मुसलमानों के भेद-भावों को दूर करने का प्रयास किया।

4. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(1) सल्तनत काल की सामाजिक व्यवस्था के कोई दो मुख्य बिन्दु लिखिए?

(2) सल्तनत काल में राज्य की आय के प्रमुख साधन क्या थे?

(3) सल्तनत कालीन वास्तुकला की दो विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए?

(4) भक्ति आन्दोलन के सन्तों द्वारा दी गई प्रमुख शिक्षाएँ क्या थीं?

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(1) सल्तनतकालीन भाषा एवं साहित्य का वर्णन कीजिए?

परियोजना कार्य–

- भक्ति आन्दोलन व सूफी सन्तों के नाम एकत्रित कर उनकी सूची बनायें और उनके बारे में जानकारी एकत्रित करें।